संपादकीय जागरण

गुरुवार, 19 अक्टूबर, 2017 : कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि. 2074

उत्सव-आनंद, उमंग और उत्साह के स्रोत होते हैं

दीपोत्सव का संदेश

प्रकाश पर्व दीपावली हर वर्ष न केवल अंधेरे से लड़ने का संदेश लेकर आती है, बल्कि हममें इस आशा का संचार भी करती है कि एक दिन हम सब अंदर-बाहर के कलुष को दूर कर उस अभीष्ट को प्राप्त करने में सफल होंगे जिसे कुछ रामराज्य के रूप में व्याख्यायित करते हैं और कुछ सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया की अभिलाषा के रूप में। दीपावली का प्रकाश यह भी कहता है कि हम सब सुख-समृद्धि की ओर इस तरह बढ़ें कि सभी साथ चलें, कोई भी पीछे छूटने न पाए। सुख-समृद्धि से भरे और साथ ही समरसता से परिपूर्ण समाज के निर्माण की चुनौती हर कालखंड में रही है और आगे भी रहेगी, लेकिन चुनौती तब आसान हो जाती है जब यह स्पष्ट हो जाता है कि किस राह जाना है और कैसे जाना है? यह सौभाग्य की बात है कि वर्तमान कालखंड ने इस उम्मीद को और बल प्रदान किया है कि एक समरस एवं सशक्त समाज का निर्माण संभव है, लेकिन इसके साथ ही यह भी ध्यान रहे कि अशिक्षा, अज्ञानता, असमानता, निर्धनता और सामाजिक एवं सांप्रदायिक संकीर्णता रूपी अंधेरे को दूर करना अभी एक अधूरा लक्ष्य बना हुआ है। इस लक्ष्य को तब आसानी से पाया जा सकेगा जब हर कोई अपने स्तर पर योगदान देने के लिए तत्पर नजर आएगा। इस एक तथ्य से सभी को केवल परिचित ही नहीं होना चाहिए, बल्कि महसूस भी करना चाहिए कि समाज और देश केवल सरकारों के बलबूते नहीं बनते। उनके निर्माण और उत्थान में आम लोगों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी के साथ एक यथार्थ यह भी है कि समाज की प्रेरक शक्ति राजनीति है। चूंकि वही समाज को सबसे अधिक प्रभावित करती है इसलिए उसमें ही सुधार की गति सबसे तेज होनी चाहिए। यह ठीक नहीं कि जब हर क्षेत्र में सुधार की पहल हो रही है तब समाज को दिशा देने वाली व्यवस्था यानी राजनीति में सुधार के अपेक्षित प्रयास नहीं हो रहे हैं। जो व्यवस्था समाज को कहीं गहरे प्रभावित करने के साथ प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से उसका संचालन भी करती है उसमें सुधार से बचा जाएगा तो अंधेरे से लड़ना और उसे परास्त करना कठिन ही होगा। नीति-नियंता इसे सही से समझें, इसके लिए हर किसी को सक्रिय होना चाहिए।

यह सही है कि राजनीति का कलुष ही तमाम समस्याओं का मूल है, लेकिन किसी न किसी स्तर पर व्यक्ति और समाज की जिम्मेदारी भी बनती है और जवाबदेही भी। इससे बेहतर और कुछ नहीं कि यह प्रकाश पर्व हर किसी को इसके लिए प्रेरित करे कि उसे अपने अतिरिक्त दूसरों के लिए भी कुछ करना है। शुभ संकल्पों के लिए दीपोत्सव से बेहतर और कोई अवसर नहीं। दीपावली स्वयं को आलोकित करने के साथ ही धन-धान्य का भी पर्व है। दीयों का जगमग प्रकाश यह भी संकेत करता है कि उत्साह एव ऊर्जा से आलोकित होकर हमें प्राणिमात्र के साथ प्रकृति की भी चिंता करना है। चूंकि वर्तमान में इसकी आवश्यकता कहीं अधिक बढ़ गई है इसलिए उसकी पूर्ति भी होनी चाहिए। यह संभव है, अगर हम सब मिलकर चलें अंधकार से प्रकाश की ओर।

विकास और प्रकाश

सरकार का दावा है कि इस दीपावली सभी 255 नगर निकायों को दो घंटे अधिक बिजली मिलेगी। धनतेरस से दीपावली तक हर तरफ जगमग होगी। ग्रामीण क्षेत्रों में कम से कम शाम के समय बिजली नहीं जाएगी। पावर कारपोरेशन इसके उपाय भी कर रहा है। बिजली रातोंरात पैदा नहीं की जा सकती इसलिए उसे ऊंचे दामों पर खरीद कर भी मुहैया कराया जाएगा। सरकार के इस निर्णय का स्वागत किया जाना चाहिए। प्रकाश विकास का पर्याय है। वर्तमान ही नहीं, पिछली सभी सरकारें भी दीपावली पर बिजली की पर्याप्त सुलभता का आश्वासन देती रही हैं। सिर्फ दीपावली ही नहीं इस तरह के सरकारी आश्वासन प्रायः हर पर्व पर जनता को मिलते रहे हैं। इस बार इस आश्वासन के खास मायने हैं।

प्रकाश से जगमगा रहे घरों में जब अचानक बत्ती गुल होती है तो गली-नुक्कड़ तक सरकारी दावे का पोस्टमार्टम शुरू हो जाता है

खास इसलिए कि सरकारें आश्वासन तो देती रही हैं, लेकिन आम शहरी हो या ग्रामीण, वह भरोसा कम ही करता है। चाहे वह लोकल फाल्ट ही क्यों न हो, प्रकाश से जगमगा रहे घरों में जब अचानक बत्ती गुल होती है तो गली-नुक्कड़ तक सरकारी दावे का पोस्टमार्टम शुरू हो जाता है। चूंकि योगी सरकार की यह पहली दीपावाली है, इसलिए अभी सवाल उठाना पूर्वाग्रह माना जाएगा। हां, इतना तय है कि जनता अपनी कसौटी पर इस दावे को जरूर कसेगी। 255 नगर निकायों को तहसील मुख्यालय के बराबर बिजली देने को आगमी निकाय चुनाव से जोड़कर भी देखा जाएगा। इसमें शक नहीं। संदेह दूर करना टीम योगी का काम है। इसके लिए उसे अभी से बधाई देना भी बनता है, लेकिन जनाकांक्षाएं इस सरकार से अधिक हैं। अब सिर्फ दीपावली व अन्य पर्वों पर बिजली बांटने के दिन गए। विकास का प्रकाश स्थायी होना चाहिए। जिला मुख्यालय व इससे ऊपर की आबादी पहले ही सरकारी अभिलेखों में 24 घंटे बिजली की हकदार हो गई है। इसे अभिलेखों से निकालकर धरातल पर लाना मूल चुनौती है।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या भाजपा के नेता ही अपने बेतुके बयानों से मोदी सरकार को विकास के एजेंडे से भटका रहे हैं?

आज का सवाल

क्या आप नीति आयोग के उपाध्यक्ष के इस बयान से सहमत हैं कि निजी क्षेत्र की नौकरियों में आरक्षण नहीं होना चाहिए?

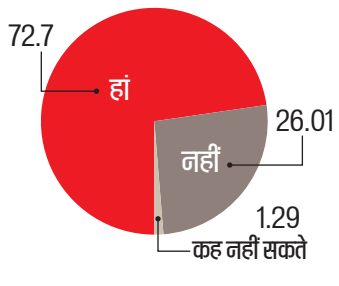

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y, N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, **N**-नहीं, **C**-कह नहीं सकते

परिणाम एसएमएस से प्राप्त नतीजों के साथ जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

प्रदूषित होता राजनीति का पर्व

प्रदीप सिंह

आखिर यह कैसी राजनीति है कि कांग्रेस गुजरात में विकास को मुद्दा बनाने के बजाय उसे पागल करार दे रही है?

दीपावली लक्ष्मीपूजन का पर्व है। इस अवसर पर लोग मां लक्ष्मी से इसकी प्रार्थना करते हैं कि घर में सुख-समृद्धि आए। जिनके घर में सुख-समृद्धि आ जाती है वे यह मानते हैं कि उनकी पूजा-अर्चना स्वीकार हो गई। जो वंचित रह जाते हैं वे ईश्वर के बजाय अपने में ही दोष खोजते हैं कि शायद हमारी पूजा में ही कोई कमी रह गई। जनतांत्रिक व्यवस्था में भी एक त्योहार आता है जो अमूमन हर पांच साल पर आता है। इस त्योहार को चुनाव कहते हैं। चुनाव के समय भी मतदाता जिन्हें वोट देकर जिताता है उनसे अपेक्षा करता है कि वे उसके जीवन में खुशहाली लाएंगे, पर मतदाता जिन्हें वोट देता है उन्हें भगवान नहीं मानता। इसलिए पांच साल बाद जब वे फिर वोट मांगने आते हैं तो वह अपने में नहीं, खुद के द्वारा चुनी हुई सरकार में खोट निकालता है। पांच साल के काम-काज की समीक्षा के बाद वह तय करता है कि उसे एक और मौका दे या यह जिम्मेदारी किसी और को देना चाहिए। तो गुजरात और हिमाचल में यह त्योहार आने वाला है। हिमाचल के मुकाबले गुजरात का क्षेत्रीय के साथ साथ राष्ट्रीय आयाम भी है। पश्चिम भारत का यह राज्य भाजपा का अभेद्य दुर्ग बन चुका है। एक ही राज्य है जहां दो पार्टियां होने के बावजूद भाजपा को पचास फीसदी से ज्यादा वोट मिल चुके हैं। कांग्रेस 27 साल से गुजरात में सत्ता से बाहर है। पूरी एक पीढ़ी तैयार हो चुकी है जिसने कांग्रेस को सत्ता में नहीं देखा।

लंबे समय तक सत्ता में रहने के फायदे और नुकसान, दोनों ही होते हैं। फायदा यह कि आपका काम अच्छा है तो मतदाता बार-बार मौका देता है और आपको काम करने का ज्यादा मौका मिलता है। नुकसान यह कि एक समय के बाद लोग ऊबने लगते हैं और उन्हें लगता है कि बदलाव होना चाहिए। इसके लिए जरूरी नहीं है कि वर्तमान सरकार का काम खराब हो। जैसा कि ओडिशा में होने की उम्मीद/आशंका नजर आ रही है। गुजरात विधानसभा चुनाव कांग्रेस और भाजपा, दोनों के लिए राजनीतिक प्रतिष्ठा का सवाल है। भाजपा यहां जीतती है तो उसके विरोधियों के हौसले पस्त होंगे और नोटबंदी एवं जीएसटी लागू करने से उपजी नाराजगी का विमर्श थमेगा। 2019 लोकसभा चुनाव की तैयारी में उसकी राह की मुश्किलें कम होंगी। यहां जीत से यह भी स्थापित होगा कि मोदी गुजरात छोड़कर भले दिल्ली चले गए हों, लेकिन गुजरात के लोगों ने उन्हें नहीं छोड़ा है। अपने गृह राज्य पर ऐसे मजबूत जनाधार वाला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के बाद पहली बार आया है। राजीव गांधी का नाम इसमें इसलिए शामिल नहीं है कि वह 1984 में एक विशेष परिस्थिति में जीते थे और 1989 में वह दमखम नहीं दिखा सके थे।

मोदी के गुजरात से दिल्ली जाने के बाद राज्य में दो मुख्यमंत्री आ चुके हैं और हार्दिक पटेल पाटीदारों का बड़ा आंदोलन चला चुके हैं। पाटीदारों की नाराजगी पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। जिग्नेश मेवानी को दलितों के नेता के तौर पेश किया जा रहा है तो अल्पेश ठाकोर पिछड़ों के नेता बताए जा रहे हैं। अभी तक इनमें से किसी ने अपने समर्थन को वोट में बदलने की क्षमता नहीं दिखाई है या कहें कि इन्हें इसका मौका नहीं मिला है। इन सबकी कांग्रेस के साथ मोर्चा बनाने की बात हो रही है। इतना ही नहीं आदिवासी नेता छोटू भाई वसावा भी इनके साथ हैं। 2001 के बाद यह पहला चुनाव होगा जब मोदी प्रदेश के मुख्यमंत्री नहीं हैं। नोटबंदी और जीएसटी लागू होने से व्यापारियों में नाराजगी है।

अवधेश राजपूत

गुजरात की आबादी में व्यवसाय करने वालों का प्रतिशत देश के किसी और राज्य से ज्यादा है। इन सबके ऊपर भाजपा की 22 साल की एंटी इनकैंबेंसी। भाजपा के लिए मुश्किलें ही मुश्किलें नजर आ रही हैं और कांग्रेस के लिए अवसर ही अवसर। इन तथ्यों के मद्देनजर गुजरात में कांग्रेस के चुनाव प्रचार पर नजर डालें तो पार्टी में वह आत्मविश्वास नजर नहीं आता, वरना क्या कारण है कि कांग्रेस राज्य में विकास को मुद्दा बनाने के बजाय विकास का मजाक उड़ा रही है। विकास को मुद्दा बनाने के बजाय उसका मजाक उड़ाया जाना राजनीति के पतन का एक और प्रमाण ही है। गुजरात में कांग्रेस का नारा ही है विकास पागल हो गया है। उसका दूसरा नारा है विकास बद्तमीज हो गया है। विकास तो अच्छा या बुरा हो सकता है। पागल और बद्तमीज कैसे हो सकता है? इसके बरक्स 22 साल से प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा कांग्रेस को चुनौती दे रही है कि वह विकास के मुद्दे पर चुनाव लड़े। कांग्रेस विकास का मजाक तो उड़ा रही है, पर यह नहीं बता रही कि मतदाता ने उसे सत्ता सौंपी तो उसका विकास का एजेंडा क्या होगा? क्या वह कर्नाटक का मॉडल होगा या हिमाचल का? केरल का या महाराष्ट्र का या फिर संप्रग (जब कांग्रेस सत्ता में थी) का? पांच दशक से ज्यादा समय तक केंद्र और राज्यों में सत्ता में रही कांग्रेस आखिर विकास का अपना कोई वैकल्पिक मॉडल मतदाताओं के सामने क्यों पेश नहीं कर रही?

मान लिया कि गुजरात का विकास का भाजपाई मॉडल खराब है, लेकिन आखिर उससे बेहतर मॉडल कौन सा है? किसी के काम में गलती निकालना आसान है पर उससे बेहतर करके दिखाना कठिन। गुजरात में कांग्रेस का सारा प्रचार भाजपा शासन के विकास के मजाक पर आधारित है। राहुल गांधी के भाषण स्टैंड-अप कॉमेडी शो की तरह रहे हैं। ऐसे शो दर्शकों को थोड़ी देर हंसाने से ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ते। गुजरात में कांग्रेस की जीत राहुल के लिए 2019 लोकसभा चुनाव में संभावना के द्वार खोल सकती है। ऐसे गंभीर और चुनौतीपूर्ण अवसर को कोई राष्ट्रीय दल इस तरह कैसे गंवा सकता है? अपने भाषणों में राहुल जीएसटी का जिस तरह मजाक उड़ा रहे हैं और विरोध कर रहे हैं वह उन्हें एक गंभीर राष्ट्रीय नेता के रूप में पेश नहीं करता। जीएसटी आजाद भारत का ऐसा आर्थिक सुधार है जिसमें देश के करीब-करीब हर राजनीतिक दल और राज्य की न केवल भागीदारी है, बल्कि पूर्ण सहमति भी है। जीएसटी काउंसिल की अभी तक जितनी भी बैठकें हुई हैं उनमें से किसी में किसी भी मुद्दे पर मतदान की नौबत नहीं आई। यह इतना बड़ा सुधार है कि केंद्र सरकार और राज्यों ने अपने वित्तीय अधिकार जीएसटी काउंसिल को सौंप दिए हैं, जिसमें केंद्र सरकार अल्पमत में है। जीएसटी लागू करने में दिक्कतों पर सरकार की आलोचना तो फिर भी समझ में आ सकती है, पर जीएसटी का मजाक उड़ाने का साहस तो राहुल गांधी ही कर सकते हैं।

राहुल जल्दी ही पार्टी का अध्यक्ष पद संभालने वाले हैं। क्या वह इतनी बड़ी जिम्मेदारी संभालते ही चुनाव में हार का तोहफा पार्टी कार्यकर्ताओं को देना चाहेंगे? 'विकास पागल हो गया है' के नारे का हश्र 'मौत के सौदागर' का न हो जाए। ऐसे नारों को अपने पक्ष में पलट देने में मोदी माहिर हैं। गांधीनगर में पार्टी कार्यकर्ताओं की सभा में वह इसका संकेत दे चुके हैं। राहुल गांधी को साबित करना है कि कम से कम अनुकूल परिस्थिति में वोट दिलाने की क्षमता उनमें है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

अंधेरे से जीतने की प्रेरणा का उत्सव

शास्त्री कोसलेंद्रदास

अंधकार भले ही बलवान हो, पर बिना बाधाओं से डरे उससे जूझा जा सकता है और उजाला फैलाया जा सकता है

एक शांत निर्मल वातावरण में दीपावली ऐसे आती है जैसे हमारे भीतर बैठे राम अयोध्या में माता कौशल्या की गोद में उतर रहे हों। उसी करुणामय भाव और निर्मलता में सारी सृष्टि तुलसी वन-सी महक उठती है। यही अमरता है दीपावली की, जो हर साल इसकी रोशनी को बढ़ा रही है। रोशनी शब्द का मूल संस्कृत के 'रोचना' शब्द में है जो ईरान में जाकर 'रोशनी' में बदल गया। माता लक्ष्मी का एक नाम 'रोचनावती' है। आज जो दीये हमारे घर-आंगन में जलने हैं उनकी उम्र कोई आज-कल की नहीं, कई युगों की है। यह भले किंवदंती हो कि दीपावली की रात माता सीता, लक्ष्मण और हनुमान के साथ श्रीराम के अयोध्या लौटने पर मनाई गई थी, पर यह जनश्रुति हमारी अंतश्चेतना में इतना समा गई है कि दीपावली हमारे लिए राम के पुनः अयोध्या लौट आने का महापर्व है। यही दीवाली तब अयोध्या में 'पादुका-प्रशासन' से मुक्ति का पर्व बनी थी। सर्वश्रेष्ठ राज्य की स्थापना की रोशनी फैलाने के लिए असंख्य दीये एक साथ जगमगाए थे, जहां राजा नहीं प्रजा प्रमुख थी। जनता उत्साहित और उल्लासित थी कि 'पादुका-पूजन' के दिन अब लद गए। असली महाराजा राम और महारानी सीता अयोध्या में पधार चुके हैं। इसीलिए अब 14 साल से पसरे अंधेरे को हटाकर अमावसी रात को पूर्णिमा में बदलना है। तभी से आज तक दीपावली पादुका-प्रशासन की समाप्ति का पर्व बनकर जगमगा रही है। यह सतत संदेश दे रही है कि मानव मात्र को निरंतर प्रकाश की ओर बढ़ना है और हर कहीं हर किसी को अंतस के आनंद से प्रकाशित करना है।

श्रीराम की अयोध्या वापसी पर जो दीपमालाएं अयोध्या में जगमगाईं होंगी, उनकी किरणें हमारे घर में उजास फैला रहे दीपों में मंडरा रही हैं। निश्चित ही इन दीपों ने सहस्रों साल पहले के त्रेतायुग में अयोध्या वालों के उल्लास को देखा था। सरयू की बहती जलधारा में अपने प्रतिबिंब निहारे थे। राम और भरत के भातृभाव के बेजोड़ दृश्य को देखा था। साथ ही देखा था माता कैकेयी के मन में मिटते अंधेरे को और मंथरा की दम तोड़ती जालसाजी को। राम आए तो सबसे पहले माता कैकेयी से भेंट हुई और सारा अंधेरा मिटता रहा। अयोध्या की उस रात्रि में जले दीयों के प्रकाश की किरणें प्रत्येक वर्ष हमें चेताने आती हैं कि मन में रावण की लंका को मारकर वहां राम की अयोध्या बनाओ। हमें हर क्षण चेतना होगा और अंधेरे को दूर करने के लिए नित नए प्रयत्न करने होंगे। जब तक कहीं भी असत्य, अन्याय या असमानता रूपी अंधेरा है तब तक प्रकाश के सहारे हमें आगे बढ़ना होगा। एक ऐसा समाज रचना ही दीपावली का संदेश है जिसमें दुःख और

अभाव के लिए कोई स्थान न हो। इसके लिए हमें बाहर के अंधेरे के साथ ही अंतस के अंधेरे से भी लड़ना होगा। यह एक निरतंर प्रक्रिया है। दीपावली यह स्मरण कराती है कि इस प्रक्रिया को बल देते रहना है।

राम के समय यदि लंका में विलास और मादकता का राज था तो अयोध्या में सिर्फ धर्म और सदाचरण था। एक मान्यता है कि जहां बहुत धन-धान्य होता है वहां धर्म का गला घुटने लगता है। इस स्थिति से बचना होगा। धन-धान्य के साथ सबके लिए सुखमय जीवन हमारा अभीष्ट होना चाहिए और उसकी प्राप्ति हम सबका साझा लक्ष्य होना चाहिए। हमें आगे बढ़ना है, लेकिन यह देखते हुए कि इस क्रम में सुख-समृद्धि के प्रसार में असंतुलन न रहे। आज जरा देखें अपने महानगरों की हालत। उनकी हालत इसीलिए बिगड़ी, क्योंकि हम दीपोत्सव का मर्म सही तरह नहीं समझ सके। निःसंदेह दीपावली पर ये सारे शहर खूब चमकेंगे, पर क्या उनकी चमकती किरणें कमजोर-बीमार और किसान-गांव को आलोकित कर सकेंगी? अच्छा हुआ कि राम की अयोध्या 14 साल में नहीं बदली थी वरना उसे देखकर राम की आंखें नम हो जातीं। वह अपनी अयोध्या को पहचान नहीं पाते। चूंकि राम की अयोध्या में धर्म का वास था इसलिए वहां सच्चे मायने में दीपावली मनती थी। राम की अयोध्या अनूठी थी-'नहिं दरिद्र कोऊ दुखी न दीना'। वहां चहुं ओर प्रकाश ही प्रकाश है। अंधेरे के लिए कहीं कोई गुंजाइश नहीं है। क्या राम के समय की प्रकाश-किरणें हमारी किरणों से मेल खा रही हैं? बढ़ता राजनीतिक अनियंत्रण, भाषा, अन्न और शिक्षा मंदिरों का लगातार प्रदूषित होते जाना दीपावली की किरणों को अयोध्या से दूर कर रहा है। फिर इस दीवाली राम कैसे पहचानेंगे? वह लंका से अयोध्या कैसे लौटेंगे? दीवाली अंधेरे पर उजाले की जीत का त्योहार तो है पर यह उजाले के आपसी संबंधों के अवलोकन और अन्वेषण का पर्व भी है। ऐसा न हो जाए कि किसी का उजाला किसी के अंधेरे की कीमत पर पनप रहा हो! यदि ऐसा हुआ तो वनवास से लौटे राम सरयू में अपने पांव धोए बिना कहीं वापस दूसरे वनवास में न चले जाएं!

दीवाली दीपोत्सव भी है। यह नाम पुराना है। कालिदास-भवभूति से पुराना, रामायण-महाभारत से भी पुराना। पांच दिनों तक लगातार चलने वाले त्योहार में भगवती महालक्ष्मी की पूजा का विधान है। लक्ष्मी वह है जो अमृत-सहोदरा है। वह चंद्रमा की समुद्र से पैदा हुई बहन है। लक्ष्मी भगवान विष्णु की पत्नी हैं। घनघोर काली रात में प्रकट होकर भी वह स्वर्ण वर्षा करती हैं। वेदों ने 'श्रीसूक्त' में लक्ष्मी को धरती माता के रूप में देखा। भारतीय दर्शन में अंधेरा अनादि है। यह सृष्टि की शुरूआत के पहले से है, पर इसे जीतने के लिए दीप जलाया जा सकता है और चहुंओर उजाला फैलाया जा सकता है। अंधकार भले ही बलवान है, पर डरे बिना उससे जूझने का संकल्प मानव की विजय है। किसी दिन एक शुभ मुहूर्त में दीये तेल और रुई की बत्ती का अग्नि से संयोग आदिमानव ने पहले-पहल किया होगा। यह संकल्प शक्ति के पांचजन्य का माधवी नाद था। मनुष्य को अंधेरे से जीतने की प्रेरणा थी। इसी प्रेरणा के परिणाम में किसी ने पहला दीप बनाया होगा। दीप भी ऐसे जो अपना बलिदान कर प्रकाश को स्थापित करने वाले हैं। ये दीप धन्य हैं। इनका प्रकाश सूरज और चांद की रोशनी से बड़ा है, क्योंकि इन्हें विधाता ने नहीं, बल्कि मानव ने अपने हाथों से बनाया। दीपावली की रात मनुष्य के हाथ में हथियार के रूप में दीप अंधकार से लड़ते हैं। अंधेरे को जीतने के प्रयत्न की यही प्रक्रिया भारतीय परंपरा में तमसो मा ज्योतिर्गमय है।

(लेखक दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

धर्म

धर्म मानव-जीवन की आचार संहिता है, जो हमें कर्तव्य-पालन की दिशा और प्रेरणा प्रदान करता है या फिर व्यष्टि-जीवन को समष्टि में विलीन होने का संदेश देता है। धर्म को सभी मत-मतांतर सुख की प्राप्ति का माध्यम समझते हैं। सभी संप्रदाय उपदेश देते हैं कि विश्व की अति सुंदरतम वस्तु को छोड़कर धर्म धारण करें। सभी ज्ञानी, संत, विद्वान, चाहे वे किसी धर्मग्रंथों के मानने वाले हों, यही शिक्षा देते हैं कि धर्म से अच्छी इस संसार में कोई वस्तु नहीं है। कुछ विद्वानों का मत है कि धर्म धारण करने से पुरुष, देवपुरुष बन जाता है। गीता, वेद, उपनिषद् आदि युगों से हमें धर्म की शिक्षा दे रहे हैं। धर्म का सिद्धांत है-अपने को स्वाधीन रखना, किसी को दुख न पहुंचाना, भूल से भी हिंसा न करना, झूठ न बोलना, क्रोध न करना, लालच न करना आदि। इसी तरह धीरज रखना, मीठे व हितकर वचन बोलना आदि धर्म के सिद्धांत माने गए हैं। ये सिद्धांत समाज के जीवन को पुष्ट रखने वाले और समाज का उसी तरह पोषण करने वाले हैं, जैसे वृक्ष की जड़ में जल डालने से वह हरा-भरा, फलता-फूलता रहता है। जिस समय मनुष्य में ये गुण संपूर्ण विद्यमान थे, वह सतयुग था। धीरे-धीरे मनुष्य के स्वभाव व व्यवहार में अंतर आता गया। ज्यों-त्यों युग का ह्रास होता गया, उसे त्रेता और द्वापर कहा गया। वर्तमान में मनुष्य के भीतर उत्तम गुणों का अभाव हो रहा है। इसलिए हम इसे कलियुग कहने लगे हैं। धर्म ही विश्व का सर्वश्रेष्ठ जीवन-दर्शन है। वह मनुष्य के महत्व और यश को पराकाष्ठा तक पहुंचाता है।

धर्म के अनुसार आचरण करने वाले को इस जगत में अर्थ और सुख तो प्राप्त होता ही है, साथ ही परलोक में भी अभ्युदय और इष्ट की प्राप्ति होती है और अंत में मोक्ष प्राप्त होता है, लेकिन साधक को धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रारंभ में क्षति अवश्य उठानी होती है। जो वस्तु धारणायुक्त अर्थात् मनुष्य को संयुक्त रखने वाली हो वही तो धर्म है। जीवों के कल्याण के लिए धर्म का विधान किया गया है। जो मनुष्य नित्य सभी का भला चाहता है, मन, वचन, कर्म से सबके हित में लगा रहता हो, वही धर्म को जानता है। धर्मात्मा वही है जिसकी आत्मा निष्पाप और उसका चरित्र स्वच्छ हो। जिसका अंतःकरण मलिन है, उसे जूही का हार भी जलते हुए अंगार की भांति कष्ट देता है।

डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

मतांतरण-एक साजिश

मतांतरण का खतरनाक खेल शीर्षक से लिखे अपने लेख में बलबीर पुंज ने लव जिहाद की आड़ में देश में चल रहे धर्म परिवर्तन के खतरे को चिन्हित किया है। आज लव जिहाद कई हिंदू युवतियों को अपनी चपेट में ले चुका है। कई राजनीतिक दल अपने निजी स्वार्थ के लिए इसे एक अफवाह बताते हैं, जबकि यह एक सच्चाई है। इसे बिल्कुल भी नकारा नहीं जा सकता है। एनआइए की जांच से प्राप्त तथ्य भी इसकी पुष्टि कर रहे हैं। तथाकथित सेक्युलरिस्टों द्वारा लव जिहाद को आधुनिक सोच की संज्ञा देना भविष्य में हिंदू धर्म के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकता है। क्या कारण है कि हिंदू युवतियां ही धर्म परिवर्तन करती हैं, मुस्लिम युवक नहीं। लव जिहाद केवल एक राज्य विशेष में ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में चल रहा है। यह एक धर्म विशेष की विस्तारवादी सोच का परिणाम माना जा रहा है। ईसाई मिशनरियां भी आदिवासी और पिछड़े इलाकों में पैसों का लालच देकर धर्म परिवर्तन का कार्य कर रही हैं। सरकार और सुप्रीम कोर्ट, दोनों को इस गंभीर मुद्दे का संज्ञान लेकर उचित समाधान निकालना चाहिए।

सुमित ओझा, बलिया

पटाखे के दुष्परिणाम

प्रभु राम के आगमन के दिन अयोध्या में खुशियां मनाई जा रही थीं। लोगों ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर एवं घरों को दीपो से सजा प्रभु राम का स्वागत किया था। समय बीतने के साथ ही स्वागत का तरीका भी परिवर्तित होता गया और आज चाइना की लड़ियों के सहारे और तेज आवाजो के पटाखों के बूते दीपावली का पर्व मनाए जाने लगा। पटाखे भी ऐसे जो कान फोड़ने की अर्हता रखते हों, इन पटाखों से जहां प्रदूषण की मात्रा रेड जोन तक पहुंच जाती है वही ये स्वच्छता का भी गला घोंट देते हैं। चूंकि यह पर्व एक बड़े तबके की आस्था से जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे पूर्णतया प्रतिबंधित तो नहीं किया जा सकता लेकिन इसके दुष्परिणाम को कम किया ही जा सकता है। पटाखे की मात्रा को अगर कम कर दिया जाए तो निश्चित ही वातावरण को साफ रखने में मदद मिलेगी।

नीरज कुमार पाठक, नोएडा

आयुर्वेद का डंका

देश को आयुर्वेद का प्रथम एम्स प्राप्त हो गया है। प्रधानमंत्री ने अपनी आस्था आयुर्वेदिक दवाओं पर व्यक्त की है। उम्मीद है कि 2022 तक सरकार देश के सभी जिलों में आयुर्वेद के अस्पताल खोलने की दिशा में सफल हो पाएगी। असल में महर्षि चरक के समय से ही यह चिकित्सा लोगों को लाभ देती रही, पर आज समस्या यह है कि दर्द से कराह रहे मरीज के पास आराम करने के लिए समय का अभाव है। वह रोजी-रोटी के लिए काम पर तुरंत जाना चाहता है। क्या ऐसे में आयुर्वेदिक चिकित्सा में तत्काल लाभ प्रदान किया जा सकता है? इस ओर पहल करने की जरूरत है। यदि यह संभव हुआ तो देश ही नही, परदेश में भी आयुर्वेद चिकित्सा का डंका बजना तय होगा।

विजय पपनै, फरीदाबाद

आस्था से खिलवाड़

देश में कुछ लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए आस्था के नाम पर भक्तों की भावनाओं से खिलवाड़ कर रहे हैं। बहुत से अंधभक्त तो इन ढोंगियों के चक्कर में इस कदर फस जाते हैं कि इनके लिए वो किसी की जान लेने और अपनी जान देने से भी नहीं डरते। इनको ही अपने जीवन का पालनहार कहते हुए इनका झूठा प्रचार करने लग जाते हैं। हमको समझना होगा कि हम इक्कीसवीं सदी के शिक्षित लोग हैं। आज विज्ञान नए-नए प्रयोग कर सबको चौंका रहा है फिर भी हम अपनी आंखों से अंधविश्वास की पट्टी क्यों नहीं खोलना चाहते?

आचार्य रामकुमार बघेल शास्त्री, पलवल

दिल में जलाएं स्नेह का दीपक

दीपावली अंधकार पर प्रकाश के जीत का पर्व है। प्रकाश खुशहाली, जीत, उत्साह, उमंग और उल्लास का प्रतीक है। अंधकार और प्रकाश के बीच संघर्ष हमेशा चलता रहा है, लेकिन जीत हमेशा प्रकाश की ही हुई है। अंधकार से प्रकाश का पथ मुश्किलों भरा अवश्य है, लेकिन हमेशा सुकुन देने वाला रहा है। जब बात उजाले की चलती है तो सबसे पहले ध्यान नन्हे मिट्टी के दीपक की तरफ जाता है। जब रोशनी के सारे युगीन प्रतिमान दगा दे जाते हैं तब विश्वास का प्रतीक बन कर उभरता है दीपक। दीपावली का दीप हमें याद दिलाता है कि इतनी हसीन और रंगीन दुनिया बनाने वाले विधाता को ये मिट्टी का पुतला कहलाने वाला मनुष्य भला क्या सौगात दे सकता था तो उसने मिट्टी का दीपक बनाया। हे ईश्वर! तूने मनुष्य को बनाया और मनुष्य ने मिट्टी के छोटे से दीपक का निर्माण किया। दीपक छोटा जरूर है, लेकिन उसका संघर्ष बड़ा और पूर्णता का प्रतीक है। दीपक न कभी थकता है न रुकता है, अनवरत चलता ही रहता है। रात कितनी भी काली अंधेरी हो उसकी सुबह होनी ही है। रात से सुबह तक के अंधकार भरे सफर का सबसे स्थायी और विश्वसनीय साथी है दीपक। जो अंधकार से तब तक संघर्ष करता रहता है जब तक कि भोर की पहली किरण आकर द्वार पर उजाले की दस्तक नहीं दे देती। जब भी अंधकार के खिलाफ उजाले का दीप प्रज्वलित करने की बात हो तो इसकी शुरुआत अपने आप से करनी चाहिए। महात्मा बुद्ध ने भी कहा है अप्प दीपो भवः अर्थात् अपने दीप आप स्वयं बनें। अपने मन के अंधकार को मिटाए बिना बाहर दीप जलाने का कोई मतलब नही है। अगर हर व्यक्ति ने अपने अंदर के मलीनता रूपी अंधकार को दूर कर लिया तो बाहर निर्मल प्रकाश स्वमेव फैल जाएगा। अतः इस दिवाली दिल के मुंडेर पर स्नेह, सौहार्द, समर्पण और आत्मसंयम का दीप अवश्य रोशन करें।

joshi.devendra85@gmail.com

ट्वीट-ट्वीट

अमावस्या की काली रात, अयोध्या सहस्र दीप जलाकर श्रीराम का स्वागत करती है और राम के साथ हुए अन्याय के लिए दिया जलाकर प्रतीकात्मक संदेश देती है। आज इसकी सजावट देखकर लग रहा है कि भगवान राम के समय भी इसे ऐसे ही सजाया गया होगा।

मालिनी अवस्थी@maliniawasthi

दीवाली की जड़ें प्राचीन वैदिक परंपराओं के अग्नि पूजन से जुड़ी हैं। चिदाग्नि को सबसे प्रखर अग्नि माना गया है जो सार्वभौमिक चेतना की प्रतीक है।

डॉ. डेविड फ्राउली@davidfrawleyved

दीवाली जड़ता को पराजित करने का प्रतीक है, क्योंकि जड़ता एक तरह से नरक की पर्याय है।

सदगुरु-जग्गी वासुदेव @SadhguruJV

एक मशहूर दामाद पर निजी हमले के लिए क्या रक्षा मंत्री को अपने पद की हैसियत का ख्याल नहीं रखना चाहिए था? हद से हद यह किसी पार्टी प्रवक्ता का काम था।

तवलीन सिंह@tavleen_singh

एक तरफ तो चर्चा हो रही है कि नोटबंदी और जीएसटी ने